पेज-8 (कवर सहित)
अक्तूबर 2021

निशुल्क ऑनलाइन वितरण

बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों का मंच

शिक्षा के लिए आह्वान

डुग डुगी

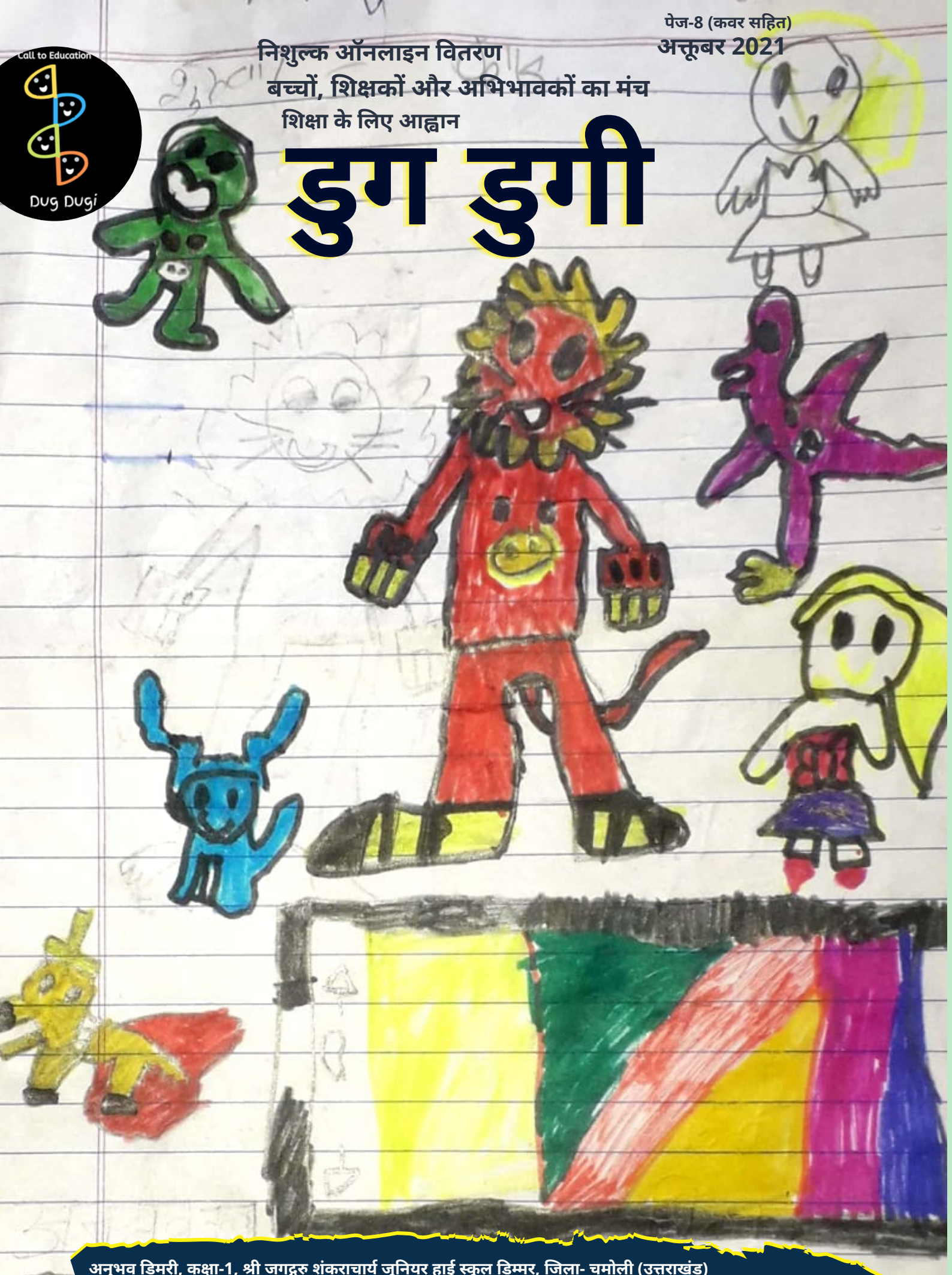

अनुभव डिमरी, कक्षा-1, श्री जगद्गुरु शंकराचार्य जूनियर हाई स्कूल डिम्मर, जिला- चमोली (उत्तराखंड)

Call to Education
Dug Dugi

डुग डुगी

किस्से, कहानियों के मंच तकधिनाधिन की प्रस्तुति

अपने जन्म से शाकाहारी नहीं है आलू वाला समोसा

जब तक रहेगा समोसे में आलू, तेरा रहूँगा ओ मेरी शालू...
यह अक्षय कुमार की एक फिल्म का गाना है, जिससे समोसे में आलू की अहमियत का पता चलता है। यानी आलू रहेगा तो समोसा बनेगा, नहीं तो आलू बिना समोसा कुछ भी नहीं।
क्या समोसा में आलू पहले से ही इस्तेमाल होता था या फिर आलू और समोसा जन्म के साथी नहीं हैं। खैर, इस पर बात करने से पहले हम अमीर खुसरो की एक पहेली में समोसे पर बात करते हैं।
वो पूछते हैं-
जूता पहना नहीं
समोसा खाया नहीं
जवाब है, तला नहीं।
यानी जूते में तला नहीं था, इसलिए नहीं पहना। वहीं समोसा तला नहीं था, इसलिए नहीं खाया।

प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो की इस पहेली से साफ जाहिर होता है कि समोसा उनसे भी पहले जमाने का है। अमीर खुसरो ने कहीं जिक्र किया है कि दिल्ली सल्तनत में घी में तला हुआ समोसा शाही परिवार और अमीरों को बहुत पसंद था।

भारत यात्रा पर आए इब्नबतूता ने लिखा है, मोहम्मद बिन तुगलक के दरबार में मसालेदार मांसाहारी और मूंगफली व बादाम का समोसा बड़े चाव से खाया जाता था। मुगलों के दस्तावेज आइन-ए-अकबरी में भी समोसे का जिक्र है।

एक बात तो तय है, समोसे को भले ही कुछ भरकर बनाया जाए, पर उसकी आकृति शुरू से ही तिकोनी रही है। समोसा तिकोना ही क्यों है, यह चतुर्भुज या षटकोण जैसा क्यों नहीं है, इन सवालों का जवाब तो नहीं दे सकते, पर तिकोना मतलब समोसा तो कह ही सकते हैं।

क्या आपने समोसा महल के बारे में सुना है। अगर नहीं सुना है तो हम बता देते हैं। मुगलों की राजधानी रहे फतेहपुर सीकरी में है समोसा महल। यह तिकोने आकार में है, इसलिए इसका नाम समोसा महल पड़ गया। बताया जाता है कि यह महल अकबर के जमाने में किसी रईस का था।

अब आपको बता ही देते हैं, समोसा भारत का नहीं है, बल्कि यहां यह ईरान से आया है। हां, आलू वाला समोसा भारत का ही है, वो कैसे, अभी बताते हैं।

फारसी इतिहासकार अबुल फजल ने सैकड़ों साल पहले समोसे का जिक्र किया था। इब्न-बतूता ने मुहम्मद बिन तुगलक और अबुल फजल ने अकबर के दरबार में पेश किए जाने वाले समोसे की बात बताई है।

अब बात करते हैं समोसा साम्राज्य की। कहीं आप यह तो नहीं समझ रहे कि समोसे का नामकरण किसी साम्राज्य या राजा के नाम पर हुआ। हम बात कर रहे हैं समोसे के ईरान से भारत तक फैलने की।

ईरानी इतिहासकार अबोलफाजी बेहाकी ने "तारीख ए बेहाकी" में समोसे के बारे में लिखा है।
पर्सियन कवि इशाक अल मावसिलीकी ने समोसे पर कविता लिखी थी।

वैसे तो माना यह भी जाता है कि समोसे का जन्म मिस्र में हुआ। दुनिया की सैर करने वाला घुमक्कड़ समोसा मिस्र से लीबिया पहुंच गया। लोकप्रियता में समोसा किसी से कम नहीं है।

पुरानी किताबों और दस्तावेजों में समोसे को संबोस्का, संबूसा, संबोसाज के नाम से पेश किया गया है। कहते हैं कि फारसी भाषा के 'संबोसाग' से निकला हुआ शब्द है समोसा

अब आपको बताते हैं कि समोसा भारत कैसे पहुंचा। इसे ईरान और अरब के व्यापारी भारत लाए थे। इसको भारत में लोकप्रियता दिलाने वालों में मुगलों का भी योगदान था।

मुगलों को समोसे से कुछ खास प्यार था। उनकी शाही रसोई ने समोसे को लजीज बनाने के लिए नये नये प्रयोग किए। उस समय समोसा नॉनवेज वाला होता था।

दिल्ली सल्तनत के शायर अमीर खुसरो लिखते हैं, समोसा मुगल दरबार की पसंदीदा डिश थी।
अबुल फजल ने आइन-ए-अकबरी में लिखा है " समोसे को मुख्य खाने से पहले परोसा जाता था। गेहूं के आटे या मैदा से बने तिकोने में मटन के कीमे के साथ बादाम, अखरोट, पिस्ता, मसाले भर जाते थे। फिर इसको घी में तला जाता था।

बताते हैं, जब इब्नेबबूता भारत पहुंचा तो उसने मोहम्मद बिन तुगलक के दरबार में लोगों को चाव से समोसा खाते देखा। उसने लिखा कि किस तरह हिंदुस्तान में समोसे का स्वाद सबके सिर चढ़कर बोलता है।

16वीं शताब्दी में पुर्तगाली भारत में आलू लेकर आए। भारत में आलू की खेती होने लगी। समोसे में आलू, हरी धनिया, मिर्च और मसाले भरे जाने लगे। इसका स्वाद पहले से ज्यादा लाजवाब हो गया। हम भारतीय यह कह सकते हैं कि समोसे को शाकाहारी बनाने वाले हम ही हैं।

"द ऑक्सफोर्ड कंपेनियन टू फूड" के लेखक एलन डेविडसन लिखते हैं, "दुनियाभर में मिस्र से लेकर जंजीबार तक और मध्य एशिया से चीन तक जितनी तरह के समोसे मिलते हैं, उसमें सबसे बेहतरीन आलू वाला भारतीय समोसा ही है।"
...तो यह थी, समोसे के मांसाहारी से शाकाहारी बनने की कहानी। चलते-चलते समोसे की तारीफ में एक और बात, वो यह कि समोसे पर इंग्लैंड इस तरह फिदा है कि वहां समोसा वीक मनाया जाता है।

आत्मनिर्भरता

देहरादून जिला की डोईवाला नगर पालिका क्षेत्र के कोटी बागी गांव में पुष्पा नेगी ने गाय के गोबर से दीये बनाने का उद्यम शुरू करके महिलाओं की आत्मनिर्भर बनाने की बड़ी पहल की है। फोटो- डुगडुगी

उत्तराखंड के देहरादून जिला की डोईवाला नगर पालिका क्षेत्र में रहने वालीं पुष्पा नेगी ने करीब एक गाय से डेयरी फार्मिंग की शुरुआत की थी। वर्तमान में 45 गोवंश हैं, जिनमें बछड़े-बछड़ियां भी शामिल हैं। दुग्ध उत्पादन के साथ ही, गोबर से दीये-मूर्तियां, सजावटी आइटम, कम्पोस्ट, उपले बना रहे हैं।

यहां तक कि कस्बों, शहरों की डेयरियों की तरह, गायों को नहलाने या गोशाला में सफाई के बाद पानी को यूं ही नालियों में नहीं बहाया जाता, बल्कि इससे सब्जियों की क्यारियों की सिंचाई की जाती है।

उन्होंने हर घर में प्रतिदिन मिट्टी का दीया प्रज्ज्वलित किया जाता है। एक बार जलाए दीये को पुनः इस्तेमाल नहीं किया जाता। ऐसे में घरों में इस्तेमाल किए दीयों का ढेर लग जाता है। ये मिट्टी में पुनः नहीं घुल पाते। इनसे मिट्टी को नुकसान भी पहुंचता है। यहीं से गोबर के दीये बनाने के बारे में सोचा।

इस कार्य में उनके साथ,आसपास रहने वालीं आठ महिलाएं सहयोग करती हैं। महिलाएं घर पर भी अपनी सुविधा के अनुसार, दीये बनाने, कलर करने और पैकिंग का कार्य कर रही हैं। करीब दो माह पहले यह कार्य शुरू किया गया।

गाय के गोबर से बने उपले, पानी गर्म करने, दूध से घी बनाने के लिए ईंधन के रूप में उपयोग करते हैं।

Princy, Class 5th, UPS Dabrai, Firozabad(U.P.)

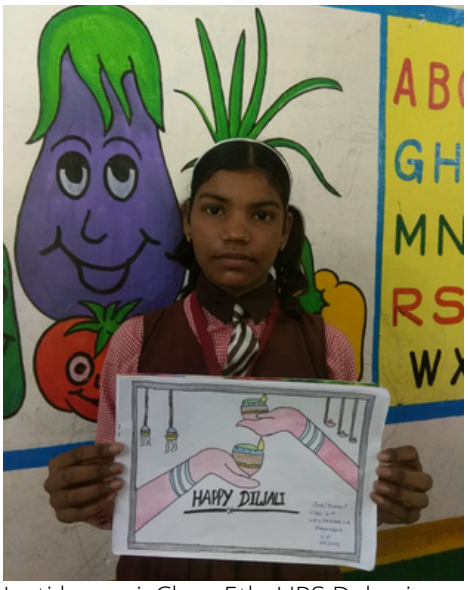

Jyoti kumari, Class 5th, UPS Dabrai Firozabad(U.P.)

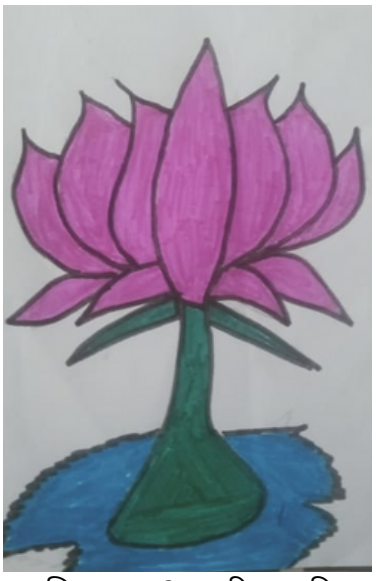

अक्षिता, कक्षा-3 राजकीय प्राथमिक विद्यालय कंथरगांव चंबा, टिहरी गढ़वाल

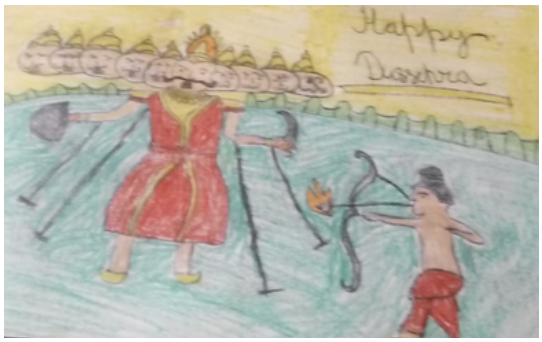

आरुषि पुण्डीर, कक्षा-4, राजकीय प्राथमिक विद्यालय कंथरगांव. चंबा, टिहरी गढ़वाल (उत्तराखंड)

हर्षिता जोशी, कक्षा 6

शालिनी, कक्षा-5, प्राथमिक विद्यालय, सिविल लाइन फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

कृतिका चढ़ार, कक्षा 8, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, जिला- सागर (मध्यप्रदेश)

विश्व बचत दिवस

विश्व बचत दिवस हर साल 31 अक्टूबर को दुनियाभर में मनाया जाता है, लेकिन भारत में यह दिन सालाना 30 अक्टूबर को मनाया जाता है। यह दिन बचत के महत्व को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है और आज की दुनिया में पैसे की बचत बहुत महत्वपूर्ण है।

विश्व बचत दिवस पहली बार 1924 में मिलान, इटली में आयोजित पहली अंतर्राष्ट्रीय बचत कांग्रेस में विश्व बचत दिवस के रूप में पेश किया गया था। यह निर्णय लिया गया कि पैसे बचाने के विचार को प्रोत्साहित करने और बैंकों में जनता के विश्वास को बहाल करने के लिए दुनिया भर में इस दिन को चिह्नित किया जाएगा।

दीपावली की बहुत सारी शुभकामनाएं

दीपावली पर रंगोली, क्राफ्ट वर्क एवं दीयों की सजावट के प्रशंसनीय कार्य राजकीय प्राथमिक विद्यालय, ग्राम बड़ासी, ब्लाक- रायपुर, जिला- देहरादून (उत्तराखंड) के बच्चों ने किए।

पार्थ ध्यानी,गंगोत्री विद्या निकेतन ऋषिकेश, ने बनाई सुंदर रंगोली।

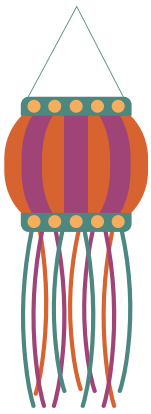

आई दीपावली आई

आओ मिलकर करें सफाई।
आई आई दीपावली आई।।
घर आँगन की करें धुलाई,

जलाएं दीपक और पटाखे।
बाँटे घर घर खील मिठाई।
आई आई दीपावली आई।।

प्रदूषण ना करें अधिक,
फिजूल खर्ची से बचें।
भाईचारे की सौगात लाई,
आई आई दीपावली आई।।

उपहारों से मान बढ़ाएं,
गरीबी को धरा से हटाएँ।
प्रेम प्यार बढ़ाने आई,
आई आई दीपावली आई।।

दीपावली

जगमग दिवाली मनाएंगे।
हम मिल कर दिवाली मनाएंगे।

साथ में मिलकर,
मिलजुल कर सब,
अपनी धरा में
साफ सुथरी दिवाली मनाएंगे।

हम मिलकर दिवाली मनाएंगे।
जगमग दिवाली मनाएंगे।।

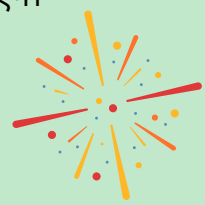

पटाखे व फुलझड़ियाँ
चरखी व बम लड़ियां
प्रदूषण की धूमधाम
कम कम मचाएंगे।

हम मिलकर दिवाली मनाएंगे।
जगमग दिवाली मनाएंगे।।

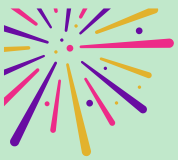

फूलों की लड़ियों से
दीयों की झिलमिल से
रंगों की रंगोली से
अपने घरों को सजायेंगे।

हम मिलकर दिवाली मनाएंगे।
जगमग दिवाली मनाएंगे।।

उक्त दोनों रचनाएं-
पंकज पाण्डेय, सहायक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय कांटली
विकासखंड -ताकुला, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

सामान्य ज्ञान

यूएन (संयुक्त राष्ट्र) के 26वें वार्षिक जलवायु सम्मेलन (कॉप26) रविवार, 31 अक्टूबर, को स्कॉटलैंड के ग्लासगो शहर में शुरू हुआ। 12 नवम्बर,2021 तक चलने वाले इस सम्मेलन में पेरिस जलवायु समझौते को कारगर ढंग से लागू किए जाने के लिए दिशा-निर्देशों को अन्तिम रूप देने पर चर्चा होगी।

मानवता के लिए 'कोड रैड' 66 देशों के 234 वैज्ञानिकों द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट है, जो दर्शाती है कि मानवीय गतिविधियों के कारण जलवायु में अभूतपूर्व गर्माहट दर्ज की गई है, जोकि पिछले दो हज़ार सालों में दर्ज नहीं की गई। यूएन प्रमुख ने कहा, "ख़तरे की कानफोड़ू घंटियाँ बज रही हैं और तथ्यों को नकारा नहीं जा सकता।" उन्होंने सितम्बर में 'United in Science' रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि जलवायु जलवायु कार्रवाई के लिए दुनिया बेहद अहम मोड़ पर पहुँच गई है।

आओ खुशियों के दीप जलाएं

सत्य-शिव-सुंदर का अनुसंधान है दीपावली
आनंदमय शिक्षा का अनुगान है दीपावली...

पर्यावरण के अनुकूल जीवन हो गोपाल
राष्ट्रशक्ति को समर्पित विज्ञान है दीपावली...

हिंदी भाषा देश का अभिमान है दीपावली
प्रार्थना और आराधना है दीपावली...

अर्थव्यवस्था का गणित,नित प्रगति करें
राष्ट्र का सच्चा सम्मान है दीपावली...

पुरुषार्थ को परमार्थ की पहचान है दीपावली.
आँख में पलता हसीं अरमान है दीपावली...

आन-बान-शान से जीवन जीयें हिलमिल गोपाल
अस्त पर शुभ सत्य का जयगान है दीपावली..

निस्वार्थ सेवा का सतत अभियान है दीपावली
तृषित अधरों की मधुर मुस्कान है दीपावली...

तराश कर कंकर को शंकर जो बनाते हैं गुरुजी
वही सृजन शक्तिमय इंसान हैं दीपावली...

सर्वजन हिताय निज बलिदान है दीपावली
आस्था, विश्वास है, ईमान है दीपावली...

तूफ़ान में जो अँधेरे से जीतता लड़कर
उसी नन्हे दीप का यशगान है दीपावली..॥

गोपाल कौशल " भोजवाल "
दुर्गा निवास बस स्टैंड
नागदा, जिला धार-454001(मध्य प्रदेश)

मधुमास

मेरे आंगन मधुमास बसंती
नवयोवन भरकर है आया
खिले फूल चहुं ओर दिशा
ले करके सुंदर छवि आभा

काली कोयल होकर मतवाली
गीत सुहाने गाती है
आम की डाली में छुपकर
पंचम सुर लगाती है

सजी कलियों से डालीं डालीं
महकी बगिया चहके माली
खग कलरव चहुं ओर है छाया
मेरे अंगना मधुमास है आया

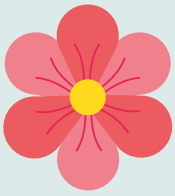

ऋतुराज करते अभिनंदन
लगा माथे सबके चंदन
बना मधुमास रसवंती
ओढ़ चुनरिया बसंती

बाल वृंद सब झूम रहे हैं
फूलों के मस्तक चूम रहे हैं
प्रातः काल में सब हर्ष आया
मेरे अंगना मधुमास है आया

महुआ महके, सरसों फूली
बेलें डालो पर, देखो झूली
संबल बना है रंग बसंती
भ्रमरों सी चपलता भरती
विटप डालियां झूम उठे हैं
सतरंगी रस घोल रहे हैं
हर आंगन उल्लास है आया
देखो रे! देखो! मधुमास है आया

सुनीता बहुगुणा
देहरादून उत्तराखंड

वीर गाथा परियोजना

सीबीएसई ने वीरता पुरस्कारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए स्कूलों में वीर गाथा परियोजना शुरू की है । केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) से संबद्ध स्कूलों को वीरता पुरस्कार विजेताओं के आधार पर परियोजनाएं तैयार करने और गतिविधियों में शामिल होने के लिए कहा गया है। वीर गाथा परियोजना का उद्देश्य स्कूली छात्रों के बीच वीरता पुरस्कार विजेताओं की बहादुरी और बलिदानों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। वीर गाथा परियोजना का संचालन 21 अक्टूबर से 20 नवंबर तक किया जा रहा है। परियोजनाएं अंत:विषय और विभिन्न स्वरूपों जैसे कविताओं, निबंधों आदि में हो सकती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय इन्टरनेट दिवस : 29 अक्टूबर

पहली बार इंटरनेट के उपयोग का जश्न मनाने के लिए दुनिया भर में हर साल 29 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय इंटरनेट दिवस मनाया जाता है।

यह दिन पहला इलेक्ट्रॉनिक संदेश भेजने का प्रतीक है, जिसे 1969 में एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर में स्थानांतरित किया गया था।

उस समय इंटरनेट को ARPANET (एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट्स एजेंसी नेटवर्क) के नाम से जाना जाता था। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स (यूसीएलए) में एक छात्र प्रोग्रामर चार्ली क्लाइन ने 29 अक्टूबर, 1969 को पहली बार इलेक्ट्रॉनिक संदेश 'एलओ (LO)' प्रसारित किया। दूरसंचार और प्रौद्योगिकी के इतिहास में इस महत्वपूर्ण घटना को मनाने के लिए पहला अंतर्राष्ट्रीय इंटरनेट दिवस 29 अक्टूबर 2005 को मनाया गया था।

सामान्य ज्ञान

उत्तराखंड को नैनीताल जिले में भारत का सबसे बड़ा सुगंधित उद्यान (aromatic garden) मिला है। उत्तराखंड वन विभाग की अनुसंधान शाखा ने नैनीताल जिले के लालकुआं में भारत के सबसे बड़े सुगंधित उद्यान का उद्घाटन किया।

तीन एकड़ से अधिक के क्षेत्र में स्थापित, इस उद्यान में पूरे भारत से सुगंधित प्रजातियों की 140 विभिन्न प्रजातियां हैं। जून 2018 में अनुसंधान सलाहकार समिति की मंजूरी के बाद वर्ष 2018-19 में परियोजना शुरू की गई थी।

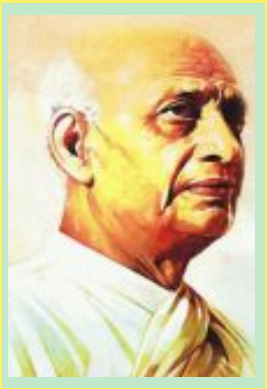

भारत में, राष्ट्रीय एकता दिवस या नेशनल यूनिटी डे 2014 से हर साल 31 अक्टूबर को भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

इस वर्ष उस महान नेता की 146वीं वर्षगांठ है, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में और बाद में देश के एकीकरण के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जन्मभूमि

जन्मभूमि का बढ़ाओ मान
वीरों का नित करो सम्मान

विद्या का जो करते हैं दान
गुरू होते हैं जग में महान

बढ़ता उसका हर पल ज्ञान
गुरू वाणी का लगाते ध्यान

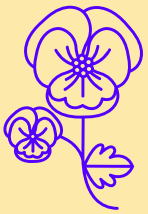

सबसे रखो व्यवहार समान
मन में न हो कोई अभिमान

वक्त से जमा करना लगान
प्रगति करता रहे यह जहान

छोड़ो अपने पग के निशान
हर समस्या का ढूंढों निदान

स्वच्छ भारत का अभियान
सफल बनाए हरेक इंसान

रामगोपाल निर्मलकर नवीन
धनौरा, जिला-सिवनी (मध्य प्रदेश)

टेलीविजन

मेरे घर पर है एक टीवी
हर टाइम बक बक करता है

सबको पसंद वो आता है
मुझको भी लुभाता है

हर पल गाने गाता है
फिल्में भी दिखाता है

दुनियाभर की खबर दिखाए
बच्चों का स्कूल बन जाए

नई पुरानी फिल्मों वाला
मेरा टीवी है मतवाला - @ डुगडुगी

बरसा पानी

आसमान से बरसा पानी,
भर गए ताल-तलैया रे!

आँगन अपना बना समंदर,
चलो चलायें नैया रे!

सड़कें सारी बन गई नहरें,
भीतर रह गई गैया रे!

झूम उठे हैं बाग-बगीचे,
नाचें सभी चिरैया रे!

हम भी नाचें मन ललचाये,
गायें ता-ता थैया रे!

लेकिन बिगड़ी अगर तबीयत,
मारेगी फिर मैया रे!

इंद्रधनुष

वर्षा की नन्हीं बूँदों को,
बादल ज़ब बिखराता है

और सूर्य भी उन बूँदों पर,
किरणों को चमकाता है!

ऐसे सुन्दर मौसम में,
इंद्रधनुष बन जाता है!

सात रंग की छटा निराली,
चम-चम-चम चमकाता है!

नीला, आकाशी, नारंगी,
हरा, बैंगनी, पीला, लाल।

इंद्रधनुष के रंग अनोखे,
मिलकर सातों करें कमाल!

नवीन डिमरी 'बादल'
कर्णप्रयाग (चमोली)

डुगडुगी पत्रिका डिजीटल वितरण के लिए पीडीएफ स्वरूप में है। यह बच्चों और शिक्षकों के रचनात्मकता और अभिनव प्रयोगों को साझा करने के लिए तैयार की जा रही है। यह पूर्ण रूप से निशुल्क है। भाष्कर जोशी- संपादक कुमाऊं मंडल एवं प्रबोध उनियाल- संपादक गढ़वाल मंडल
किसी अन्य जानकारी के लिए संपर्क करें- 7017902656, 9058866961, 9760097344, 8899477295,
मेल-takdhinaadhin@gmail.com, prabodhuniyal@gmail.com, bhaskarjoshi2024@gmail.com
ऑनलाइन प्रकाशन का पता- राजेश पांडेय (तक धिनाधिन) प्रेमनगर बाजार, डोईवाला, जिला- देहरादून (उत्तराखंड) पिन-248140